Vol-12, ISSUE-I, July-December 2020 ISSN :2319-7137

INTERNATIONAL Literary Quest

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

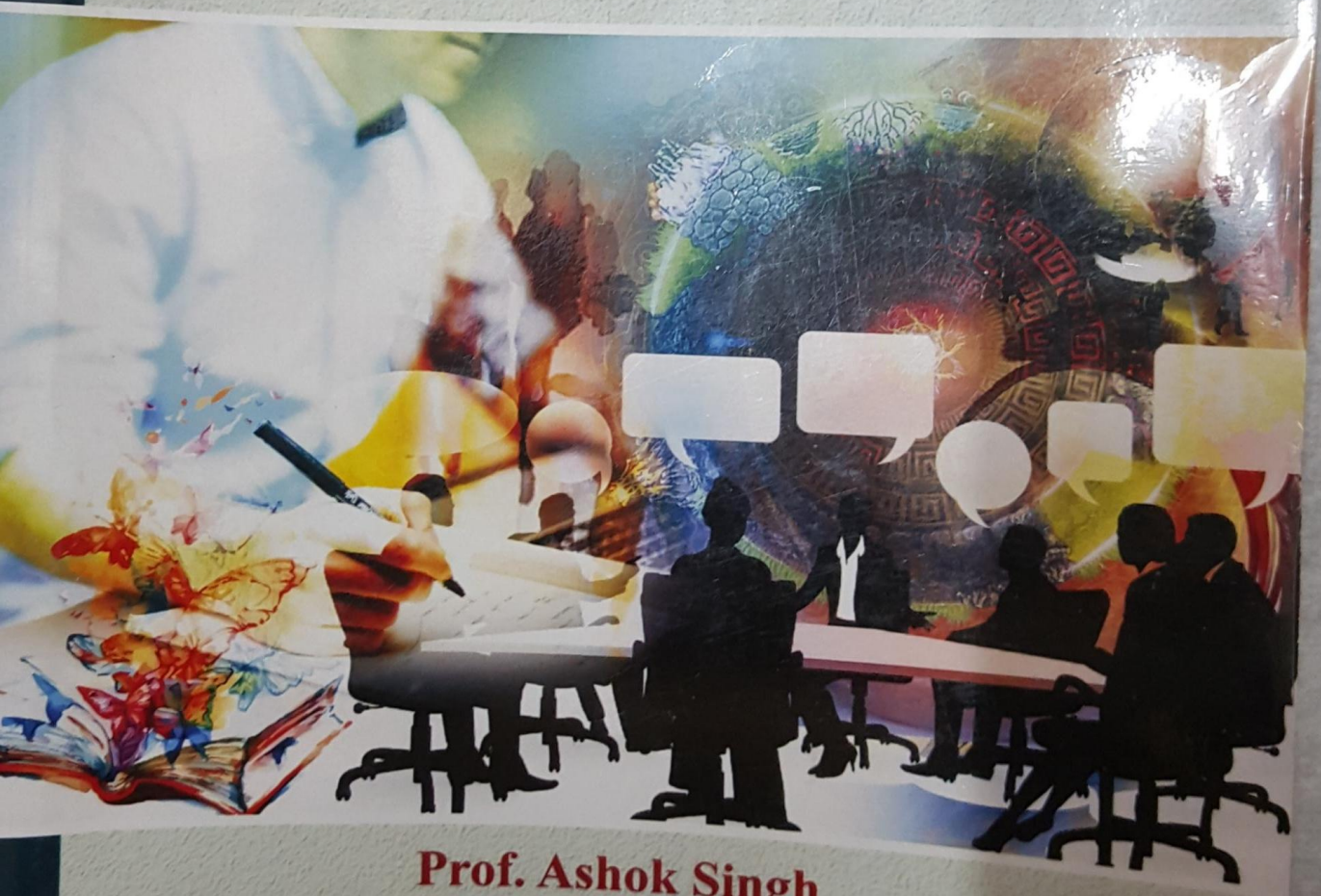

Prof. Ashok Singh
(Editor in Chief)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

Dr. Surendra Pandey
(Editor)

©सम्पादक

प्रधान सम्पादक
प्रो० अशोक सिंह (पूर्व कला संकाय प्रमुख, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)
सम्पादक
डॉ० विकास कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)
डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कूबा पी०जी० कॉलेज, दरियापुर, नेवादा, आजमगढ़)
उप सम्पादक
डॉ० नलिनी माथुर (एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, भगिनी निवेदिता कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ० विनय कुमार शुक्ल (असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभागाध्यक्ष, रामानुजप्रतापसिंह देवशासकीय स्ना.महा., बैकुण्ठपुर, कोरिया, छ.ग.)
सुनील कुमार सिंह (असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, अर्मापुर स्ना. महाविद्यालय, कानपुर)
कार्यकारी सम्पादक
डॉ० सच्चिदानन्द चौबे (प्राचार्य, हंसराज राम लालदेई स्ना. महाविश्वविद्यालय, झुरिया, भगिनी, गोरखपुर)
मोहम्मद आदिल (असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, भवन्स मेहता पी.जी. कालेज, कौशाम्बी, उ.प्र.)
आफताब आलम (शोध छात्र, प्रा.भा.इ.सं. पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
सह सम्पादक
डॉ० अजीत कुमार राय (गाजीपुर)
डॉ० नीतू टहलानी (पूर्व शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
सुदर्शन चक्रधारी (शोध छात्र, प्रा.भा.इ. सं. पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ० रिपुंजय कुमार सिंह (पूर्व शोध छात्र, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
डॉ० रविशंकर पाण्डेय (रोहतास, बिहार)
राणा अवद्यूत कुमार (शोध छात्र, भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)
विधि परामर्शदाता
डॉ० रणजीत सिंह चौहान
अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय

ISSN : 2319-7137
मूल्य : रु0 250.00

सम्पादकीय पता
डॉ० विकास कुमार
सिविल लाइन, तकिया रोड,
सासाराम, रोहतास (बिहार)
ई-मेल : internationalliteraryquest@gmail.com
मो० : 09470828492, 9934468661
वेबसाइट- www.internationalliteraryquest.in

कम्पोजिंग
सुधीर कुमार, 7408996394
मुद्रक :
राजैरिया ऑफसेट
जगतपुरी, दिल्ली-110093

नोट : सभी पद अवैतनिक एवं अव्यावसायिक हैं। प्रकाशित लेखों एवं उद्धरणों का दायित्व स्वयं लेखकों का है। लेखों एवं उद्धरणों से सम्बन्धित किसी भी वाद-विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।

38.	विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन : एक अध्ययन डॉ० कुमारी अनुपम प्रिया	207-211
39.	डॉ० अंबेडकर का सामाजिक न्याय अजित कुमार भारती	212-214
40.	बाजारवाद की संस्कृति में स्त्री डॉ0 अरुण कुमार मिश्र	215-220
41.	पंत की काव्यगत विशेषता – भाषा शैली डॉ. ऋतु वार्ष्णेय गुप्ता	221-223
42.	बीसवीं सदी में नारी विमर्श रेनू गुप्ता	224-229
43.	चित्रा मुद्गल की रचनाओं में स्त्री के विविध रूप सुमन कुमारी	230-234

ISSN : 23197137, Volume: 12/Issue: 01, July-December : 2020

पंत की काव्यगत विशेषता – भाषा शैली

डॉ. ऋतु वार्ष्णेय गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी–विभाग
किरोड़ीमल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली–110007

काव्य के दो पक्ष होते हैं – (1) भाव पक्ष, (2) कला पक्ष। काव्य का जो प्रतिपाद्य होता है उसे भाव पक्ष कहते हैं और भाषा आदि प्रतिपादन के माध्यम कला पक्ष में आते हैं।

पंत जी भाषा को केवल विचाराभिव्यक्ति का साधन न मानकर उसके संस्कृत और अलंकृत रूपों को भी मान्यता देते हैं। पंत की भूमिका इस कथन की साक्षी है, जिसमें उन्होंने शब्दों की प्रकृतियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। इसलिए पंत जी अपनी भाषा के प्रति सदैव जागरुक रहे हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा अत्यन्त समृद्ध और शाश्वत है यह कहना अनुचित न होगा कि खड़ी बोली को ब्रजभाषा जैसी मधुरता प्रदान करने में पंत जी का प्रमुख हाथ रहा है। इनकी भाषा की निम्नलिखित विशेषतायें हैं – (1) चित्रण शक्ति, (2) चित्रमय विशेषण, शब्दों की अन्तरात्मा का ज्ञान, ध्वनि चित्रण, व्याकरण, मुहावरे एवं कहावतें आदि।

शब्दों के माध्यम से प्रतिपाद्य का इस प्रकार वर्णन करना कि उसका चित्र ही पाठकों की आँखों के सामने झूलने लगे, भाषा की चित्रण शक्ति कहलाती है। पंत जी के काव्य में यह पूर्ण रूप से मिलते हैं। पंत जी को शब्दों की अन्तरात्मा का विशद ज्ञान है अर्थात् वे भली प्रकार जानते हैं कि कौन सा शब्द किस अर्थ एवं ध्वनि का बोध कराने में सक्षम है। यहाँ तक कि वे पर्यायवाची शब्दों में भी बड़ी गम्भीरता से अंतर स्थापित कर देते हैं।

भाव और भाषा के सामंजस्य से तथा स्वरैक्य के द्वारा पंत जी ध्वनि चित्रण करने में भी अत्यन्त कुशल हैं। वे ध्वनि के द्वारा ही वर्णित विषय को साकार कर देते हैं। यथा –

"पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश, पल--पल परिवर्तित प्रकृति वेश"

इस पंक्ति में ध्वनि चित्रण का प्रभावशाली वर्णन हुआ है। पल–पल परिवर्तित में लघु आकार वाले अक्षरों की वृद्धि होने के कारण प्रकृति के बदलते चित्रपट के दृश्यों के समान आँखों के सामने (समक्ष) घूमने लगता है। इस प्रकार निःसन्देह कहा जा सकता है कि 'पंत' जी की भाषा अत्यन्त सरल, सजीव एवं समृद्ध है।